जी आठ के लिए संदेश : लड़कियों की शिक्षा पर अभी काम शुरू कीजिए

क्लोई शैलेन्डर और एमी नार्थ

स्कॉटलैंड में 6 जुलाई को विश्व के कई नेता एकत्रित हुए और उनकी पुकार थी सभी बच्चों को स्कूल जाने की। ग्लैनइगल्स के इन आठ लोगों में दुनिया के करोड़ों लोगों की ज़िन्दगी में फ़र्क़ लाने का अधिकार था – शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, साफ़ पीने का पानी तथा लोकतंत्रता। इस बैठक में ग़रीबी हटाने पर काफी विचार हुआ, ख़ासकर अफ्रीका में। कुछ महत्वपूर्ण निर्णय भी किए गए। असल में काफी बच्चों की निजी आवाज़ इन नेताओं तक पहुँची थी। कुछ बच्चों ने इस कॉन्फ्रेंस में भी भाग लिया जिसे सी 8 के रूप में रखा गया। यह बच्चों के स्तर पर आयोजित किया गया था यूनिसेफ द्वारा। कुछ बच्चों ने अन्य प्रक्रियाओं द्वारा भी इस संदेश को आगे बढ़ाया – ''मेरे दोस्त को स्कूल भेजा'' और लड़कियों की शिक्षा पर आधारित ''स्नेक्स एंड लैडर्ज़'' खेल

सी 8

जुलाई 3 – 5 के दौरान यह सी 8 जवान लोगों के लिए आयोजित किया गया था। इसके ज़रिए जी 8 बैठक में प्रभाव पहुँचाने का अवसर दिया गया। ग्लैइगल्स के इस जी 8 बैठक में यू के कुर्सी पर था और विश्व के कई धनी नेताओं ने भाग लिया। दुनिया की ग़रीबी पर गौर किया जा रहा था। सी 8 में भाग लेने वाले जवान लोगों ने अपनी समस्याओं को जी 8 के सामने रखकर उन्हें इन पर गौर करने के लिए मज़बूर किया। ये बच्चे सिएरा लियोन, भूटान, यमन जैसे देशों से थे। विश्व से कुल 17 बच्चे डनब्लेन गाँव में एकत्रित हुए। तीन दिन तक इन लोगों ने साथ विचार विमर्श किया। ग़रीब देशों के बच्चों ने जी 8 देशों के बच्चों से चर्चा की। तीसरे दिन एक योजना तैयार की गई जिसे ''बदलाव के लिए बच्चे' नाम दिया गया। इसे स्कॉटलैंड के प्रथम मंत्री, जैक मैकोनल को दिया गया। इन्होंने इसे जी 8 बैठक में प्रस्तुत किया।

सी 8 में तीन विशेष क्षेत्रों पर गौर किया गया – मिलेनियम डिवलपमेंट गोल्स, अफ्रीका

कमीशन रेकमेन्डेशन तथा गरीबी के इतिहास को सहायता और कर्ज़ से जोड़ा जाये। दुनिया के 600 मिलियन गरीब बच्चों के अधिकारों को इस बैठक के बीच में रखा गया।

निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा, विशेषकर लड़कियों के लिए – इसे 'बदलाव के लिए बच्चे' की योजना में सबसे ऊपर रखा गया। इस में इन तीन दिनों की बातचीत को प्रकट किया गया – क्यों लड़कियों की शिक्षा में भेद किया जाता है। भूटान की देचेन पीमा ने काफी भावना सहित प्रस्तुति की जिसमें उसने लड़कियों की शिक्षा में कमी को प्रतिशत द्वारा गौर करवाया। ख़ासकर एशिया में – जैसे कि पाकिस्तान में हर 10 लड़कियों में से केवल 6 लड़कियॉ प्राथमिक स्कूल जाती हैं। लड़की शिक्षा पर आधारित खेल स्नेक्स और लेडर्ज़ जो 'पहुॅच से आगे' प्रोजेक्ट के अंदर विकसित की गई – इस खेल ने काफी परिचर्चा शुरू की – लड़की शिक्षा में विभिन्न बाधाओं पर गौर किया गया। इस दौरान, अभिनाटा पामर, सियेरा लियोन की 11वर्ष की लड़की ने बताया कि किस तरह उसे अपने मॉ – बाप को अपनी शिक्षा के लिए मनाना पड़ा। उसे काफी दृढ़ता से उन्हें राजी कराना पड़ा। कम्बोडिया की 11 वर्श की थिडासू का भी यही कहना था। अधिकांश लड़कियों को स्कूल जाने का मौका नहीं मिलता। कई लड़कियॉ अनाथ हैं और उन्हें रोज़ी – रोटी कमानी पड़ती है। इस जी 8 बैठक में सब बच्चों को निःशुल्क अच्छी शिक्षा पहुॅचाने का तय होना आवश्यक है।

जी – 8 नेताओं को सी 8 का प्रस्ताव

1. ग़रीबी – बस
   - ग़रीबी अब हटाओ

2. शिक्षा – अभी
   - सभी को शिक्षा पहुॅचाने का निश्चय

3. बच्चों पर हिंसा – अब वक्त खत्म
   - बच्चों को हिंसा से सुरक्षित

4. सहभागिता, लोकतंत्र और शासन – और भी
   - लोकतंत्र को बेहतर बनाएं और बच्चों के प्रतिनिधि हर देश में नियुक्त करें।

5. एच आई वी / एड्स – बाहर करें।
   - एच. आई. वी. / एड्स का मुफत इलाज लोगों तक पहुँचे।

6. बच्चों का परिश्रम बंद किया जाये ।

7. स्वस्थ वातावरण, पानी और सफाई सभी लोग हासिल कर सकें।
   - साफ पानी काफी मात्रा में मिले तथा वातावरण साफ बने – कियोटो प्रॉटोकोल को अपनाया जाए।

8. स्वास्थ्य और पोषण – सबको मिले।
   - कर्ज़ को हटाकर लोगों की आर्थिक स्थिति में बढ़ावा मिले जिससे लोगों के स्वास्थ्य में बदलाव आये।

मेरे दोस्त को स्कूल भेजिए

इस आन्दोलन में जिन बच्चों ने भाग लिया है उन्होंने सी 8 के ज़रिए इस संदेश को जी 8 तक पहुँचाया। उन्होंने जैक मॅकानेल को 20,000 'दोस्तों' की प्रदर्शनी दिखाई। दुनिया के कई देशों से भेजे गए उन दोस्तों की तस्वीर प्रदर्शित की गई जो स्कूल नहीं जा पाते। इनमें से 8 तस्वीरों को जैक मॅकानेल ने जी 8 में दिखाने का वादा किया।

इसके बाद कई हफतों तक कई उत्सवों में इल 'दोस्तों' के बारे में बातचीत हुई। जी 8 में इस समस्या पर परिचर्चा हुई और सब बच्चों तक शिक्षा पहुँचाने के प्रयत्न पर गौर हुआ। जुलाई एक पर लंदन क स्कूलों से बच्चों ने दुनिया के बच्चों का संदेश टोनी ब्लेयर तक पहुँचाया। यूथियोपिया में ''मेरे दोस्त को भेजो'' के कई उत्सव आयोजित हुए। जी 8 दूतावास के अधिकारी, इथियोपियन रेडियो और टी. वी., सरकारी लोग और बच्चों के साथ बैठक हुई। रूआंडा में एक नई योजना शुरू हुई जिसके अन्तर्गत एक प्रदर्शनी, रोल

प्ले हुए। इसके फलस्वरूप शिक्षा मंत्रालय ने यह घोषणा की कि प्राथमिक स्तर तक निःशुल्क शिक्षा हर बच्चे को मिल सकेगी। 16 जून को कई मशहूर लोगों ने बच्चों के साथ ''दोस्तों'' की इमारत को लंदन की दक्षिणी बैंक पर आयोजित किया।

यू. के. के किंग जॉन स्कूल, एसेक्स ने 'दोस्त' बनाने के बारे में यह कहा –

मेरे दोस्त को स्कूल भेजो –

दोस्त बनाओ

हमने देखा है कि ग़रीबी बहुत बड़ी समस्या है पूरी दुनिया में। दस करोड़ से अधिक बच्चे स्कूल नहीं जाते जिनमें अधिकांश संख्या लड़कियां की है। कई बच्चों को परिवार संभालने के लिए घर में रखा जाता है। कुछ और इतने ग़रीब हैं कि स्कूल पहुॅच नहीं पाते। हमने ये 'दोस्तों' का आन्दोलन जी 8 वालों को जागृत करने के लिए शुरू किया उन्हें चारों तरफ की ग़रीबी दिखाने का प्रयत्न था।

दुनिया के कई देशों से बच्चों ने 'दोस्तों' के चिन्ह को जी 8 तक पहुॅचाया जिससे कि वे जग कर स्थिति को देखें। हम चाहते हैं कि जी 8 ग़रीब देशों के कर्ज़ को माफ कर दे और उन पैसों से लोगों के जीवन को बेहतर करें – और स्कूल बने।

हमने अपने स्कूलों में कुछ योजना चलाईं हैं जैसे ''बच्चों की ज़रूरतें'' और ''कामिक रिलीफ'' लेकिन ये काफी नहीं है।

इन लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए कई चीज़ करने की ज़रूरत है। इन्हें साफ़ पानी, अच्छा भोजन, स्थानीय स्कूल और घरों की ज़रूरत है। यह बहुत जरूरी है कि बच्चों को शिक्षा मिले जिससे कि आगे चल कर वे कमा सके नहीं तो वे अपने मॉ – बाप जैसे ग़रीबी में फंसे रहेंगे।

हमने अपने ''दोस्तों'' को जी 8 भेजा है क्योंकि दुनिया की अहम् आर्थिक बातों पर निश्चय किया जाता है। इन ''दोस्तों'' को इसीलिए हमने भेजा है जिससे कि हमारी आवाज़ को आप सुन सेकें।

किंग जॉन स्कूल, बेनफलीट, एसेक्स यू. के. से हैरियट गियरी, सोफी पेन, नाताली वैब, एमीरैंकिन आठवां वर्ष।

सॉप और सीढ़ी :

लड़कियों की शिक्षा का यह खेल लंदन के साउथ बैंक में 16 जून को आरम्भ हुआ। यह खेल बियॉन्ड एक्सेस के हैनाह आबेड और छात्रों की मदद से इन्स्टीच्यूट ऑफ एजूकेशन में बनाया गया। यह खेल यह दिखाता है कि किस तरह 6 मिलियन लड़कियों के लिए, शिक्षा भाग्य का खेल है। इस खेल को इस तरह खेलते हैं – एक देश की लड़की जहॉ शिक्षा हासिल करना मुश्किल है इस खेल में भाग लेती है। एक रंगीले बोर्ड पर मिट्टी फेंकते हैं। रास्ते में, प्राथमिक स्कूल पहुॅचने में, कई बाधाएं हैं। इस खेल में सॉप का मुॅह एक बाधा के समान है। यह लड़की की शिक्षा में अड़चन के रूप में है। सॉप के साथ लड़की के जीवन की अड़चन पढ़ी जाती है जिस कारण उसकी पढ़ाई रूक जाती है। कभी उसे पैसे कमाने के लिए पढ़ाई रोकनी पड़ती है, कभी स्कूल तक का रास्ता खतरनाक है, इसलिए वह पढ़ नहीं सकती।

साथ में कभी – कभी सीढ़ी चढ़ने का मौका भी मिलता है। पढ़ाई करने में कोई मदद करता है जिससे लड़की सीढ़ी चढ़ कर आगे चढ़ जाती है। कभी निःशुल्क शिक्षा या शिक्षिकाओं की संख्या बढ़ने से लड़कियॉ सीढ़ी चढ़ कर साक्षर हो सकती हैं। 100 नम्बर पहुॅचने से वह शिक्षित कहलाई जा सकती हैं। ये इस खेल में विजयी होती हैं। लेकिन 'सॉपों' की संख्या इतनी है कि ज़ाहिर है कि उन्हें शिक्षा पानी बहुत मुश्किल है। पूरी दुनिया में यही हाल है।

यह खेल बच्चों और जवान, सभी लोगों को बहुत पसंद आया है। क्योंकि इसके ज़रिए वे लड़कियों के मुद्दों को समझ सकते हैं। होली ट्रिनिटी स्कूल, सिडकप, लंदन की हैनाह ग्रोज़ियर, एशले बुशनैल और ब्रायनी स्नैलिंग जो सब 11 वर्ष की हैं, इस खेल को खेलकर अफ्रीका की लड़कियों की शिक्षा के बारे में बहुत जागुत हुई। इसे खेल कर उन्होंने टोनी ब्लेयर और जॉर्ज बुश को ''दोस्तों'' का चित्र बनाकर भेजा।

यह सॉप और सीढ़ी का खेल नाइजीरिया में भी खेला गया है। इसे ग्लरोरिया ओकोलुगबो ने चाले किया। वह काडुना में औरतों के लिए प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम चला रही है। उन्होंने इस खेल को अपनी औरतों के बीच खिलाया।

वह बहुत उत्सुक है क्योंकि यह खेल उसकी औरतों के लिए उनकी ज़िन्दगी में असल रूप में है।

जी 8 नेताओं का वायदा

इस बैठक में जी 8 के नेताओं ने 50 बिलियन डॉलर ग़रीबों को 2010 तक देने का वचन दिया है। करीब 18 देशों का 1.5 अमरीकी बिलियन डॉलर का कर्ज भी माफ करने का वचन दिया। हालांकि अलग से लड़कियों की शिक्षा पर मदद की बातचीत नहीं हुई लेकिन मूल शिक्षा की और सहायता जरूर देने का निश्चय हुआ।,

,

अगर जी 8 के नेता अपना वचन निभाते हैं तो कई और लड़की और लड़के स्कूल में भर्ती होंगे और शिक्षा का स्तर भी बेहतर होगा। दुख की बात यह है कि मदद 2010 तक ही पहुॅंचेगी और तब तक करीब 100 मिलियन बच्चे अनपढ़ रहेंगे। 2005 तक का जो वक्त दिया गया सभी बच्चों को शिक्षित करने का, वह भी अधूरा रह जायेगा। इसलिये बहुत जरूरी है कि इन जी 8 नेताओं पर दबाब ज़ारी रखा जाए कि वे शिक्षा में जेंडर समानता लाने का बचन निभाएं।

जी 8 समाप्त हो चुका और अब सब का ध्यान मिलेनियम + 5 सम्मिट पर जायेगा। जो सितम्बर में न्यूयॉर्क में होगा। 191 देशों के नेता इस बैठक में शामिल होंगे और आठ मिलेनियम डिवलपमेंट उद्देश्यों पर गौर करेंगे जिसके अन्तर्गत 2015 तक गरीबी हटाने का निश्चय किया गया है। लड़की और लड़के की संख्या कक्षाओं में बराबर करने का भी इरादा है। उन्हें यह भूलने नहीं देना चाहिए। हर लड़की को शिक्षा दिलाने का काम पूरा करना है।

.

संपादकों के पत्र

जुलाई 6 – 8 की जी 8 बैठक का सबसे महत्वपूर्ण निश्चय है अफ्रीका के लिए 50 बिलियन अमरीकी डॉलर और अधिक योगदान दिया जायेगा। ''गरीबी को इतिहास बनाओ'' आन्दोलन की सोच में करीब 10 मिलियन लोगों की जान बचाई जा सकती है अफ्रीका में। बॉब लेजडॉफ एक आधुनिक संगीतकार है – इनका कहना है कि उद्देश्य हासिल हो गया।

यह ज़ाहिर है कि इस योगदान में बढ़ौती हुई है क्योंकि सबको शिक्षा पहुॅचाना अहम् माना गया है। परन्तु लड़कियों को ख़ास रूप से शिक्षा पहुॅचाने का कोई अलग से योगदान नहीं किया गया।

बेशक इस योगदान को लड़कियों की शिक्षा की ओर भी इस्तेमाल किया जायेगा। हमें यह पक्का करना है कि इस ओर प्रगति ज़ारी रखी जाये।

ऐग्नेस पैसिनी के लेख में यह साफ कहा गया है कि जब भी कोई घोर समस्या या आपत्ति आती है तो सबसे पहले औरतों और लड़कियों को घाटा होता है। सी 8 में बच्चों का यही कहना रहा है कि आपातकाल में बच्चे ख़ासकर लड़कियॉ सबसे अधिक दुख भुगतती हैं। उनकी पढ़ाई को ज़्यादा मूल्य नहीं दिया जाता। आने वाले महीनों में बियॉन्ड एक्सेस प्रोजेक्ट कई लेखों द्वारा जेंडर और प्रशिक्षण मुद्दे को पूरी तरह लोगों तक पहुॅचायेगा। इनमें ठोस तरीकों पर गौर किया जायेगा। जिसके द्वारा औरतों और लड़कियों तक शिक्षा पहुॅच सके। चाहे बजट हो, चाहे कार्यक्रम, चाहे जेंडर भाविक तरीके या समाज में आन्दोलन हो। इनको सरल रूप में लिखा जायेगा और वास्तविक स्थितियों को प्रस्तुत करते हुए।

इन लेखों को सभी तक पहुॅचाने की कोशिश होगी। इसे सफल करने के लिए लोगों से मदद ली जा रही है। अगर आप में से किसी को ये लेख चाहिए या किसी योजना को इसकी जरूरत हो तो हमें जरूर सूचित कीजिए। हमारा पता इस समाचार पत्र के पीछे है।

आशा है इस अंक को आप पसंद करेंगे।

क्लोई शीला इलेन

दृष्टिकोण

''शिक्षक बंधे हुए हैं।''

मनोज सिंह, मध्य प्रदेश, भारत

जितना भी में बियॉन्ड एक्सेस प्रोजेक्ट से नाता रखता हूं। उतना मुझे एक बात परेशान करती हे। बड़ी – बड़ी बातचीत और पॉलिसी असलियत से बहुत दूर हें। शिक्षकों को जिस वातावरण में काम करना पड़ता है और सरकार का उनके प्रति व्यवहार बहुत ही भिन्न है।

ढाका के समिनार में मानव अधिकार पर बहुत चर्चा हुई थी। जेंडर समानता और प्रशिक्षण का विकास प्रक्रिया में महत्व भी पहचाना गया मिलेनियम डिवेलपमेंट लक्ष्य (गोल्ज़) के पहले और दूसरे गोल्ज़ – प्राथमिक शिक्षा तक तब पहुँचाना तथा जेंडर समानता का प्रचलन और औरतों का सशक्तिकरण। मध्य प्रदेश सरकार के लक्ष्य मिलेनियम डिवेलपमेंट गोल्ज़ के जैसे ही हैं। 1994 से सरकार ने तीन मानव विकास रिपोर्ट तैयार किए हैं। उन पर अमर्त्य सेन की सोच से काफी प्रभाव हुआ है। लोकतंत्रता, समानता, न्याय, पारदर्शिता, सहभागिता, बेहतर स्वास्थ्य और प्रषिक्षण, औरतों का सशक्तिकरण मानव अधिकार, स्वतंत्रता – ये सब पॉलिसी की प्रसिद्ध सोच हैं।

हमारी सरकार समाल में पूरा परिवर्तन चाहती है। शिक्षकों को इस बदलाव प्रक्रिया में सबसे अहम् माना गया है। उन्हें छात्रों को सशक्त करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है। छात्रों को प्रचलित प्रथा पर सवाल उठाने का काम सौंपा गया है। भविष्य में लोकतंत्रता और समानता पर आधारित करने की ज़िम्मेदारी दी गई है। लेकिन शिक्षकों को इस प्रक्रिया को सफल बनाने में पूरे रूप से सहायता नहीं मिलती।

शिक्षक ''जकड़े हुए''

मैंने एक इश्तिहार दीवार पर लिखा देखा। मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है लेकिन हर जगह वह बंधा हुआ पाया जाता है। यह हमारे शिक्षकों की सिथति हैं। वे

एकदम स्वतंत्र नहीं हैं। उन्हें शासन जकड़ कर रखता है। उन्हें अपनी सोच और समझ से काम करने की आज़ादी नहीं है।

इसके अलावा शिक्षकों को कईं समस्याओं को सामना करना पड़ता है। कई स्कूलों में केवल एक ही शिक्षक को पूरा स्कूल चलाना पड़ता है। उसे प्रधानाचार्य, बाबू, सहायक, डाकिया, स्कूल की अन्य प्रक्रियाएं, सभी कुछ देखना पड़ता है। इस हाल में वह कैसे अच्छी शिक्षा में ध्यान दे सकता है। शिक्षकों की अत्यंत कमी है।

वैसे भी, शिक्षकों को पढ़ाने के अलावा और भी कई काम करने होते हैं। जनगणना, पोलियो टीका, चुनाव आदि के काम में भी उनको लगाया जाता है। पढ़ाई में इस तरफ काफी रूकावटें आती हैं। लेकिन वे इसके बारे में कुछ कर नहीं सकते।

पढ़ाई का कार्यक्रम भी बहुत रटने का होता है। बच्चों के मनोविकास के लिए कार्यक्रम नहीं होता। परीक्षा में सफल होने के लिए ही पढ़ाई की जाती है।

जेंडर समानता हासिल नहीं हो रही

अच्छे शिक्षक अपनी सोच के अनुसार नहीं पढ़ा पाते क्योंकि उन्हें सरकार की नीति को भी ध्यान में रखना पड़ता है। यह शिक्षिकाओं के लिए और भी कठिन है शिक्षकों की तुलना में। तीसरी एम डी जी और सरकार की नीति अनुसार जो नहीं है। आदमी और औरत के जीवन में बहुत भिन्नता है। कुछ लोग सोचते हैं कि ये स्वाभाविक है। कुछ सोचते हैं कि ये हमारी संस्कृति में गहरी तरह समाया हुआ है। इसे बदलना ठीक नहीं है। दोनों की दुनिया अलग है हालांकि कुछ औरतें मर्दों की दुनिया में काम करतीं हैं, मर्द औरतों का काम करने का सपना भी नहीं देखते। इस समानता का ये सब कुछ पर प्रभाव पड़ता है। अक्सर प्रधानाचार्य अगर औरत है तो उसे कम आदर मिलता है। मर्दों को अधिक भाव दिया जाता है। अगर कोई शिक्षिका अपने तरीके से पढ़ाना चाहती है तो उसे काफी विरोध का सामना करना पड़ता है ख़ासकर के अगर वह जेंडर असमानता पर सवाल उठा रही है। उसे यही नहीं, घर – परिवार, पड़ोसी, सहपाठी, पूरा समाज और कभी अपने छात्रों से भी मुकाबला करना पड़ता है।

सरकार की जेंडर नीति को चलाने में जीत की जगह हार अधिक होती है। यह आदमी और औरत के बीच युद्ध जैसा बन जाता है। एम डी जी का कहना है कि निजी और देश का विकास जेंडर समानता होने पर ही हो सकता है। ये ज़मीन तक के स्तर तक क्यों नहीं समझा जाता ? वह समझने की सबसे ज़्यादा जरूरी इस जगह है। अगर लोग इस समानता को, सही तरह समझ सकें तो ये युद्ध के रूप में नहीं रहेगा। तब लोग इसे साकार बनाने में रूचि लेंगे।

यहॉ कहावत है, ''अभी दिल्ली बहुत दूर है'' – इसका मतलब है कि दिल्ली की नीति, ज़मीन के स्तर नहीं लागू हो सकती। हमें कोशिश करना है दिल्ली को और पास लाने को।

आगे के रास्ते

ढाका की बैठक बहुत अच्छी रही। शायद मैंने यहॉ सबसे अधिक सीखा। यहॉ और भी शिक्षक और ज़मीन से जुड़े लोगों को अधिक भाग लेना चाहिए। वे लोग जिनको ऐसा अवसर कभी नहीं मिला है। अगर शिक्षक लोग देश की नींव बनाते हैं तो उन्हें और इस तरह के अवसर क्यों नहीं मिलते। अगर हमें बच्चों में स्वतंत्रता जगाना है तो उसकी नींव हम लोगों में पहले बनानी चाहिए।

smanoj57@rediffmail.com पर आप इनसे सम्पर्क कर सकते हैं। मनोज सिंह हरदा, मध्य प्रदेश, भारत से हैं।

जेंडर और प्रशिक्षण पर नई रिपोर्ट

75% एशिया – प्रशान्तीय देशों में ''सब के लिए प्रशिक्षण'' नाकामयाब

ग्लोबल कैम्पेन फॉर एजूकेशन की बनाई हुई रिपोर्ट और ए एस पी बी ए ई ने यह पाया है कि 14 में से 11 देश सब नागरिक तक शिक्षा नहीं पहुॅचा पाये हैं। 14 के आधे देश समानता लाने में सफल रहे। यह साल एम डी जी का टार्गेट था प्रशिक्षण में जेंडर समानता लान का।

बियॉन्ड एक्सेस प्रोजेक्ट की बनाई हुई रिपार्ट कार्ड द्वारा प्रशिक्षण में जेंडर समानता नापने का तरीका उपलब्ध हुआ।

जी सी ई और ए एस पी बी ए ई द्वारा शुरू की गई रिपोर्ट कार्ड ने यह नतीज़ा देखा – 14 में से दो देशों को ए ग्रेड मिला (थाइलैंड और मलेशिया) इन 14 में से 9 देशों को डी ग्रेड मिला यानि कि बहुत बुरे नम्बर मिले। 4 देशों को तो एफ ग्रेड मिला (नेपाल, पपुआ, न्यूगिनी, सॉलोमन द्वीप और पाकिस्तान)

जी सी ई और ए एस पी बी ए ई ने ''और बेहतर काम करने'' की जागु पुकार उठाई है दुनिया के नेताओं के लिए। सभी को प्रशिक्षण पहुॅचाना बहुत आवश्यक है। इस रिपोर्ट कार्ड में 5 इंडीकेटर्ज़ हैं नापने के लिए – मूल शिक्षा पूरा करना, निःशुल्क शिक्षा में सरकार की ज़िम्मेदारी, अच्छे योगदान, जेंडर समानता और पूरी तरह की समानता।

इस वर्ष के एम डी जी टार्गेट को प्राप्त करना बहुत संभव है लेकिन काम चलते रहना चाहिए। जैसा कि कुछ देशों में (मलेशिया और थाइलैंड में देखा गया है, टार्गेट हासिल हो सकता है।

यह रिपोर्ट www.aspbae.org में मिल सकता है।
:

———————————